

क्या बाइबल स्त्रियों को कलीसिया में अगुवाई के पद या सेवाएँ निभाने से मना करती है?

फ़िलिप बी. पेन (Philip B. Payne) © 2023 Payne Loving Trust

(जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf और गाबी ज़िंगर [Gabi Singer], सौजन्यपूर्ण अनुमति से)

आप यह व्याख्यान और PowerPoint प्रस्तुति www.pbpayne.com से डाउनलोड कर सकते हैं (अंग्रेज़ी में), प्राचीन यूनानी पाठों के उन सब चित्रों के साथ, जो यहाँ केवल आंशिक रूप से दिए गए हैं।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में मेरे डॉक्टरेट अध्ययन के आरंभ में एक व्याख्याता ने कहा: “नए नियम का कोई भी स्थान, यदि उसे उसके मूल संदर्भ में ठीक से समझा जाए, स्त्रियों की सेवा को सीमित नहीं करता।” मैं लगभग खड़ा होकर चिल्ला उठा होता: “यह सच नहीं है!”

यह व्याख्यान पिछले 50 वर्षों के मेरे शोध-परिणामों का सारांश है, जिन्होंने अगुवाई की भूमिकाओं में स्त्रियों के विरुद्ध चार मुख्य आपत्तियों के संबंध में मुझे अपनी सोच बदलने पर विवश किया।

आपत्ति 1: बाइबल सिखाती है कि पुरुष सिर है।

दूसरे शब्दों में, केवल पुरुषों को ही कलीसिया में और घर में अगुवाई करनी चाहिए। यह धारणा 1 कुरिन्थियों 11:3 के अनुवाद “**पुरुष स्त्री का सिर है**” पर आधारित है। जर्मन में (और दूसरी भाषाओं में भी) “सिर” (Haupt) शब्द से आजकल अक्सर “पर अधिकार” का भाव निकलता है। परन्तु संदर्भ दिखाता है कि पौलुस का अभिप्राय था “**पुरुष स्त्री का उद्गम है**”, और इससे वह आदम की ओर संकेत करता था। स्रोत के अर्थ में सिर 12वीं शताब्दी से यूनानी शब्दकोशों में मिलता है।¹

अधिकार यूनानी में सिर का कोई प्रचलित अर्थ **नहीं** था। सबसे व्यापक यूनानी शब्दकोश इस शब्द के उनचास लाक्षणिक अर्थों की सूची देता है। उनमें से किसी में भी अधिकार शामिल नहीं है।²

लौकिक प्राचीन यूनानी के अधिकतर शब्दकोश इस शब्द का एक भी ऐसा उदाहरण नहीं देते जिसमें इसका अर्थ अधिकार हो। **अधिकार** के अर्थ में इस शब्द का **सबसे पहला** उल्लेख, जो मुझे किसी लौकिक यूनानी शब्दकोश में मिला, ईसवी चौथी शताब्दी का है। यूनानी शब्दकोश **अधिकार** के अर्थ वाले **सिर** को बीज़ान्टिनी या मध्ययुगीन बताते हैं, अर्थात् पौलुस के लिखने के बहुत बाद का। इसलिए यह असंभावित है कि पौलुस **सिर** से **अधिकार** व्यक्त करना चाहता था।

पौलुस के समय में व्यापक रूप से प्रचलित इब्रानी बाइबल का यूनानी अनुवाद (सेप्टुआजेंट) इस बात की पुष्टि करता है कि **अधिकार** इस शब्द का कोई प्रचलित अर्थ **नहीं** था।³ वह शारीरिक सिर के इब्रानी उल्लेखों का अनुवाद लगभग **हमेशा** इसी शब्द से करता है, परन्तु लगभग **कभी नहीं**, जब “सिर” का अर्थ “**अगुवा**” हो।

180 ऐसे मामले हैं जिनमें इब्रानी शब्द **सिर** का अर्थ अगुवा है। इन 180 मामलों में से **केवल एक** में यूनानी सेप्टुआजेंट स्पष्ट रूप से सिर (kephale) शब्द का प्रयोग “अगुवे” के रूपक के रूप में करता है। अन्य सब **कथित** मामले, जिनमें “सिर” का अर्थ “अगुवा” है, तीसरी शताब्दी में ओरिजेन (Origenes) द्वारा जोड़े गए। परन्तु

संदर्भ से स्पष्ट होता है कि उनका अर्थ “अगुवे” से कुछ भिन्न है, या उनका अनुवाद “सिर के रूप में”⁴ किया गया है, जिसे यूनानी पाठक “सिर है” के बजाय “सिर के समान”⁵ समझ सकते थे।

पौलुस के **सिर** वाले 12 रूपकों में से **किसी** के लिए भी **अधिकार** अर्थ आवश्यक नहीं है। **दस स्रोत** या उद्गम व्यक्त करना चाहते हैं और शेष दो **शिखर**, चरम-बिंदु के लिए हैं।⁶

कलीसिया की अगुवाई से स्त्रियों को बाहर रखना बाइबल में स्त्री अगुवों की बहुत सी पुष्टियों से मेल नहीं खाता। रोमियों 16 में पौलुस जिन दस व्यक्तियों को सेवा में सहकर्म के रूप में नाम लेकर बताता है, उनमें से सात स्त्रियाँ हैं, जिनमें फीबे है, “किखिया की कलीसिया की सेविका (डीकन)” और “बहुतों की, और मेरी भी, अगुवा (यूनानी *prostatistis*)”⁷, और यूनियास (Junia), जो अपने पति की तरह “प्रेरितों में प्रमुख” थी।⁸

सारांश में कहा जा सकता है: लौकिक यूनानी शब्दकोश, यूनानी बाइबल, पौलुस का भाषा-प्रयोग और पौलुस द्वारा कलीसिया की अगुवाई में स्त्रियों का समर्थन दिखाते हैं कि “सिर” से पौलुस का अभिप्राय “अधिकार” नहीं था। बाइबल कहीं भी स्त्री के संबंध में पुरुष के प्रभुत्व या अगुवाई की भूमिका की शिक्षा नहीं देती।

आपत्ति 2: 1 तीमुथियुस 2:12 सिखाता है: “मैं स्त्री को न शिक्षा देने की अनुमति देता हूँ, न पुरुष पर अधिकार रखने की।”

यदि इसे एक सामान्य प्रतिबंध समझा जाए, तो इस बात की अनदेखी होती है कि 1 तीमुथियुस में झूठे शिक्षकों द्वारा बहकाए गए व्यक्तियों के रूप में **केवल** स्त्रियों की पहचान की गई है, और कि यह पत्री एक विशेष **स्थानीय** समस्या⁹ को संबोधित करती है।

इसके अतिरिक्त यह अनुवाद **चार** कारणों से संदिग्ध है।

पहला, यूनानी शब्द **authentein**, जिसका अनुवाद पुरानी NIV (New International Version) “अधिकार रखना” करती है, सबसे अच्छी तरह **“अधिकार हथियाना”** अनूदित होता है। इस शब्द का **पहला** प्रयोग, जिसका स्पष्ट अर्थ “अधिकार चलाना” है, **तीन शताब्दियों** बाद ही मिलता है।¹⁰ नए नियम में “अधिकार चलाने” के लिए एक दूसरे शब्द का प्रयोग होता है। पौलुस के समय में इस शब्द का अर्थ या तो “प्रभुत्व जमाना” हो सकता था, या, जो अधिक बार होता था (21 बार), “अधिकार को छीनकर अपने हाथ में लेना”।

इसलिए किंग जेम्स अनुवाद में अधिक सटीक शब्द हैं: **“अधिकार हड़प लेना”**। नए नियम का मानक शब्दकोश इस शब्द की परिभाषा देता है: “स्वतंत्र अधिकार का एक पद **अपना लेना**”। 2011 की NIV ने अपना अनुवाद **सुधारकर “अधिकार का दावा करना / अधिकार अपने ऊपर ले लेना”** कर दिया।

दूसरा, पौलुस आम तौर पर उस संयोजक (और) का प्रयोग, जो “शिक्षा देना” को “अधिकार हथियाना” से जोड़ता है, **एक ही** विचार व्यक्त करने के लिए करता है।¹¹ अतः वह स्त्रियों को शिक्षा देने से **केवल तभी** मना करता है, जब वे इसके लिए अधिकार को हड़प लेती हैं। यह मान्यता-प्राप्त शिक्षा-अधिकार वाली स्त्रियों को सीमित नहीं करता, जैसे प्रिस्किल्ला (Priscilla), जिसने उसी नगर में अपुल्लोस को शिक्षा दी। पौलुस तीमुथियुस की दूसरी पत्री में उसे नमस्कार भेजता है।

तीसरा, **“मैं अनुमति नहीं देता”** एक भ्रामक अनुवाद है, क्योंकि यूनानी में यह क्रिया सामान्यतः किसी **समय-सीमित** और **अस्थायी** बात की ओर संकेत करती है। इसका व्याकरणिक रूप **शायद ही कभी** कोई स्थायी

प्रतिबंध व्यक्त करता है। सामान्यतः यह किसी ऐसी अनुमति या प्रतिबंध की ओर संकेत करता है जो इस समय लागू है, और इसलिए इसका अनुवाद **“मैं (अभी) अनुमति नहीं देता” होना चाहिए**, जो किसी सार्वभौमिक प्रतिबंध के बजाय इफिसुस के तत्कालीन संकट की ओर संकेत करता है।

चौथा: यदि यह पद स्त्रियों को **स्थायी रूप से** शिक्षा देने से मना करता है, तो यह स्त्रियों के शिक्षा देने के बारे में बाइबल के बहुत से सकारात्मक कथनों का **खंडन करता है**।

परमेश्वर ने प्रेरित **पवित्रशास्त्र** के मुख्य स्थान स्त्रियों के द्वारा प्रकट किए, जिनमें मिर्याम और दबोरा के गीत, हन्ना की प्रार्थना, अबीगैल की भविष्यद्वाणी, राजा लमूएल की माता का **प्रेरित कथन**, एलीशिबा की आशीष और मरियम का स्तुति-गान (Magnificat) है, जो पवित्रशास्त्र की पहली मसीही **व्याख्या** है।¹²

1 तीमुथियुस 2:12 इसलिए एक विशेष समस्या से संबंधित है, अर्थात् इफिसुस की कलीसिया में बहकाई गई उन स्त्रियों से, जो झूठी शिक्षाएँ फैला रही थीं। यह स्थान इस कलीसिया की स्त्रियों को अधिकार हड़पने और किसी पुरुष को शिक्षा देने से मना करता है। जो स्त्रियाँ मान्यता-प्राप्त शिक्षा-पद के साथ शिक्षा देती हैं, जैसे प्रिस्किल्ला, वे ऐसे अधिकार को हथियाती नहीं। पौलुस स्त्रियों को हर जगह या हर समय शिक्षा देने या पुरुषों पर अधिकार रखने से मना नहीं करता।

आपत्ति 3: स्त्रियाँ स्थानीय कलीसियाओं की प्राचीन, अध्यक्ष या पास्टर नहीं हो सकतीं, क्योंकि बाइबल स्थानीय कलीसियाओं की अगुवाई में केवल पुरुषों को, कभी स्त्रियों को नहीं, रखती है।

वास्तव में नया नियम **मसीह को छोड़कर किसी को भी**, न पुरुष को न स्त्री को, नाम लेकर **अध्यक्ष या पास्टर** नहीं कहता।

जब यूहन्ना को “प्राचीन” और पतरस को “संगी प्राचीन” कहा जाता है, तो इसका संबंध किसी स्थानीय कलीसिया से नहीं है, बल्कि इस बात से है कि **प्रेरितिक प्रत्यक्षदर्शियों** के रूप में वे पूरी, अर्थात् विश्वव्यापी कलीसिया के प्राचीन थे।

बाइबल में **केवल** एक व्यक्ति को किसी **स्थानीय कलीसिया** की अगुवाई के लिए एक विशेष उपाधि दी गई है: “फीबे, किंखिया की कलीसिया की सेविका (डीकन)।” यह “व्यावहारिक रूप से **निश्चित** है कि फीबे को वहाँ की कलीसिया की ‘एक (या संभवतः ‘वह’) सेविका (डीकन)’ कहा गया है।”¹³

पौलुस सब विश्वासियों को अध्यक्ष या प्राचीन बनने के लिए प्रोत्साहित करता है, जब वह कहता है: “यह बात सच है कि यदि **कोई** अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है।”¹⁴

तीतुस 1 में प्राचीनों की योग्यताओं का कर्ता भी **“कोई भी (पुरुष या स्त्री)”** है। यूनानी मूल में दोनों सूचियों में एक भी “वह (पुरुष)”, “उसे” या “उसका” या पुरुषों तक कोई **दूसरी** (व्याकरणिक) सीमा नहीं है, अधिकतर अंग्रेज़ी या जर्मन अनुवादों के विपरीत।

कुछ लोग मानते हैं कि **“एक ही पत्नी का पति”** वाली योग्यता स्त्रियों को बाहर कर देती है, परन्तु पितृसत्ता या पूरकतावाद के प्रमुख समर्थक भी, डगलस मू (Douglas Moo) और थॉमस श्राइनर (Thomas Schreiner), मानते हैं कि यह स्त्रियों को बाहर **नहीं** करती।¹⁵ समाधि-लेख दिखाते हैं कि “एक ही पत्नी का पति” विवाह में

विश्वासयोग्यता के लिए एक **मुहावरा** था।¹⁶ किसी मुहावरे को **अलग करने वाली** शर्त की तरह लेना गलत है।¹⁷ चूँकि फीबे एक सेविका (डीकन) थी और 1 तीमुथियुस 3:11 में **सेवकों (डीकनों)** की योग्यताओं में **स्त्रियों** की योग्यताएँ शामिल हैं, इसलिए अगले पद में “एक ही पत्नी का पति” स्वाभाविक रूप से स्त्रियों को बाहर **नहीं** कर सकता।

चौथी शताब्दी में पितृसत्ता के समर्थक योहन क्रिसोस्टम (Johannes Chrysostomus) ने भी लिखा: “एक ही पत्नी के पति” सेविकाओं (डीकनेस) पर भी लागू होता है।¹⁸ वह समझता था कि यूनानी पुल्लिंग रूप स्त्रियों को बाहर **नहीं** करते। नए नियम में 7500 से 8000 के बीच पुल्लिंग रूप हैं जिनमें स्त्रियाँ या तो अवश्य शामिल हैं या शामिल हो सकती हैं, लगभग हर पद में ऐसा एक व्याकरणिक रूप।¹⁹ जैसा गॉर्डन ह्यूजनबर्गर (Gordon Hugenberger) ने दिखाया है, यह सामान्य बात है कि पुरुषों से बाइबल की अपेक्षाएँ **स्त्रियों** पर भी लागू होती हैं।

20

आपत्ति 4: पौलुस तीन बार आज्ञा देता है: “स्त्रियाँ कलीसियाओं में चुप रहें” (1 कुरिन्थियों 14:34-35)।

यद्यपि कुरआन की प्रारंभिक हस्तलिपियों में पाठ के बहुत से भेद हैं, फिर भी इस्लाम व्यापक रूप से यह सिखाता आया है कि कुरआन का पाठ कभी बदला नहीं गया। इसके विपरीत, कलीसिया ने ओरिजेन (Origenes) के समय से हमेशा हस्तलिपियों में पाठ-भेदों को स्वीकार किया है। बाइबल की अचूकता पर शिकागो घोषणा-पत्र के अनुच्छेद X में पुष्टि की गई है कि “पवित्रशास्त्र की प्रतिलिपियाँ और अनुवाद उस सीमा तक परमेश्वर का वचन हैं, जिस सीमा तक वे मूल को विश्वासयोग्यता से प्रस्तुत करते हैं”। पाठ-आलोचना के वैज्ञानिक सिद्धांत हज़ारों उपलब्ध हस्तलिपियों से नए नियम के मूल पाठ का उल्लेखनीय सटीकता से पुनर्निर्माण करना संभव बनाते हैं। मरकुस की सबसे पुरानी हस्तलिपियों में लंबा समापन (मरकुस 16:9-20) नहीं है, और इसके ठोस प्रमाण हैं कि वह मरकुस के मूल पाठ में नहीं था। लंबा समापन पद 18 में विश्वासियों को आश्वासन देता है कि “वे साँपों को हाथों से उठा लेंगे, और यदि वे प्राणघातक विष भी पी जाएँ तो उनकी कुछ हानि न होगी।” चूँकि यह मूल पाठ में नहीं था, इसलिए यह कलीसिया के लिए परमेश्वर का अधिकारपूर्ण संदेश नहीं है। इसी प्रकार 1 कुरिन्थियों 14:34-35 को **केवल तभी** अधिकार होता, जब वह पौलुस की मूल पत्नी में होता।

हस्तलिपियों से निकलने वाले **सात** कारण और इन पदों के शब्दों से निकलने वाले **नौ** कारण मुझे और बहुत से दूसरे लोगों को इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि ये पद पौलुस की मूल पत्नी में नहीं थे, बल्कि बाद में जोड़े गए। अभी मैं केवल तीन का सारांश दूँगा।

पहला, इन पदों का स्पष्ट अर्थ इस अध्याय के उन कथनों के विरुद्ध है कि “**सब**” शिक्षा दे सकते हैं और भविष्यद्वाणी कर सकते हैं, और अध्याय 11:5 के इस कथन के विरुद्ध है कि स्त्रियाँ भविष्यद्वाणी करती हैं।

दूसरा, पौलुस की पत्रियों की हस्तलिपियों में कोई दूसरा पाठ-अंश नहीं है जो लगभग इतना लंबा हो और जो (अलग-अलग हस्तलिपियों में) दो अलग-अलग स्थानों पर एक दूसरे से इतनी दूर हो, बिना इसके कि इसका कोई स्पष्ट कारण हो।

तीसरा, सबसे पुरानी बाइबल इन पदों को बाद का अप्रामाणिक जोड़ बताती है।²¹

अब मैं इन बातों पर विस्तार से विचार करूँगा।

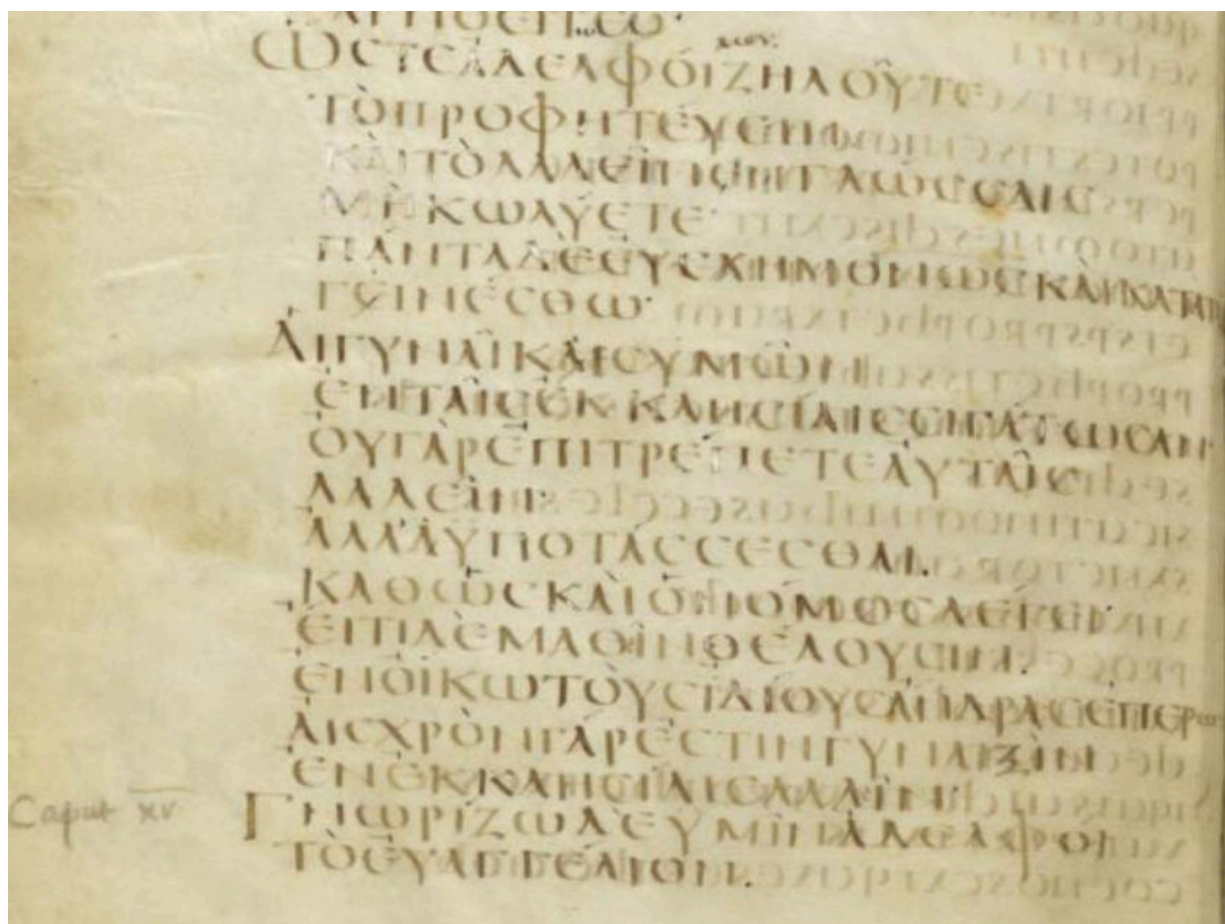
पहला, ये पद इस अध्याय के बहुत से दूसरे कथनों के विरुद्ध हैं।

विरोधों से बचने के लिए बहुत से लोग कहते हैं कि पौलुस **केवल** बाधा डालने वाली बकबक को चुप कराता है या, जैसा पहली बार 1962 में सुझाया गया²², **केवल** भविष्यद्वाणियों के **मूल्यांकन** को। परन्तु ये व्याख्याएँ मौन की उस असीमित माँग के अनुरूप नहीं हैं, जो इस खंड में तीन बार ज़ोर देकर दोहराई गई है। यदि पद 34 केवल भविष्यद्वाणियों के मूल्यांकन को मना करता है, तो पद 34 ऐसे बोलने की भी **अनुमति देता है**, जो पद 35 में **वर्जित है**। आखिरकार, कुछ सीखने की इच्छा से प्रश्न पूछना भविष्यद्वाणियों के मूल्यांकन से बिलकुल अलग बात है, और यह शायद ही कभी बाधा डालता है। ये व्याख्याएँ इस परिणाम पर पहुँचाती हैं कि पौलुस उसी बात का खंडन करता जो उसने अभी-अभी लिखी है।

दूसरा, सब “पश्चिमी” यूनानी हस्तलिपियों में ये पद पद 40 के बाद आते हैं, परन्तु अधिकतर दूसरी हस्तलिपियों में ये पद 33 के बाद आते हैं।

यह छठी शताब्दी का प्रसिद्ध “पश्चिमी” कोडेक्स D है। इस चित्र का पहला पूरा अनुच्छेद अध्याय 14 का अंत है। अगला अनुच्छेद पद 34 से 35 है। अंतिम खंड से अध्याय 15 आरंभ होता है।

“Western” Codex D (06) Claromontanus



वे दो अलग-अलग स्थान, जहाँ पद 34 से 35 मिलते हैं, यह संकेत देते हैं कि किसी ने उन्हें हाशिये पर लिखा और बाद के प्रतिलिपिकारों ने उन्हें या तो पद 33 के बाद या पद 40 के बाद डाल दिया। मुझे यह समझाने दीजिए:

पवित्रशास्त्र के **मूल** पाठ के निर्धारण में **मूलभूत** सिद्धांत यह है: “जो पाठ **सब** दूसरे पाठों की उत्पत्ति को सबसे अच्छी तरह समझाता है, वही सबसे अधिक संभावना से मूल पाठ है।”

पौलुस की किसी पत्री की कोई हस्तलिपि बिना किसी दिखाई देने वाले कारण के **किसी भी** बड़े पाठ-खंड को **लगभग** इतनी दूर नहीं खिसकाती, और आरंभिक समय के किसी पाठक ने इस पाठ के स्थान की आलोचना नहीं की।²³ परन्तु यह **सामान्य** बात थी कि लेखक हाशिये के पाठ को मुख्य पाठ में उतार लेते थे।

उदाहरण के लिए, चौथी शताब्दी के कोडेक्स वैटिकनस (Codex Vaticanus) में मत्ती के पाठ के हाशिये पर पुराने पाठ वाले 20 स्थान हैं। 3 को छोड़कर ये सब बाद की लगभग सब हस्तलिपियों के मुख्य पाठ में शामिल हैं।

यूनानी दृढ़ता से मानते थे कि स्त्रियों को सार्वजनिक सभाओं में चुप रहना चाहिए।²⁴ इसलिए यह शायद ही आश्चर्य की बात है कि किसी पाठक ने **ईसवी 200 से पहले** किसी समय हाशिये पर वह “जानी-मानी या प्रचलित बुद्धि” जोड़ दी, जिसे ये पद व्यक्त करते हैं।

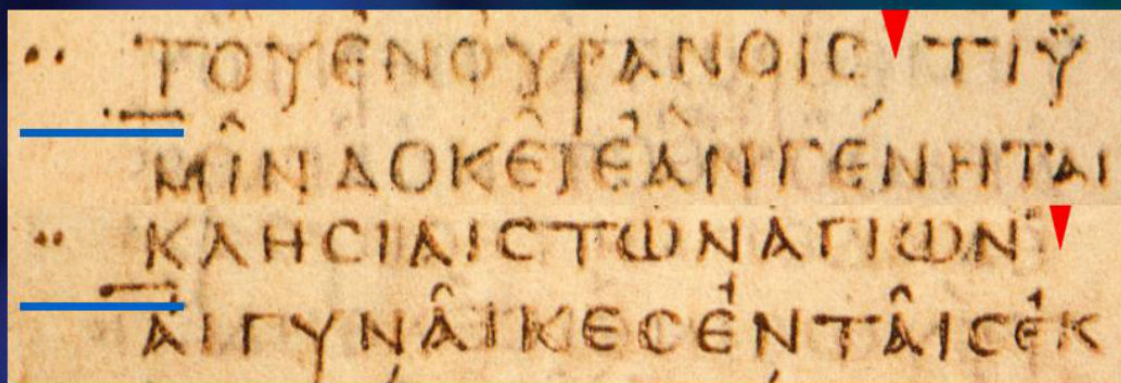
उन दो स्थानों का, जहाँ ये पद मिलते हैं, **एकमात्र** स्पष्टीकरण जो लेखकों की ज्ञात आदतों से मेल खाता है, यह है कि किसी ने पहले इन दोनों पदों को किसी हस्तलिपि के हाशिये पर लिखा और बाद के प्रतिलिपिकारों ने उन्हें या तो पद 33 के बाद या पद 40 के बाद डाल दिया।

सामान्य बुद्धि माँग करती है कि कोई **सामान्य** बात – हाशिये के पाठ को मुख्य पाठ में डालना – किसी ऐसी **असाधारण** बात से अधिक संभावित मानी जाए जिसका कोई दूसरा उदाहरण ज्ञात नहीं – इतने अधिक पाठ को बिना किसी स्पष्ट कारण के इतनी दूर खिसकाना।²⁵

तीसरा, हमारी सबसे पुरानी बाइबल, कोडेक्स वैटिकनस, जिसकी अपनी सटीकता के लिए व्यापक रूप से प्रशंसा की जाती है, इन पदों को, जो कलीसिया में स्त्रियों को चुप कराते हैं, **एक अप्रामाणिक, झूठे** व्यवधान के रूप में चिह्नित करती है।

नीचे के चित्र में लाल त्रिकोण उस स्थान को चिह्नित करता है जहाँ 1 कुरिन्थियों 14:34-35 में मूल पाठ बाधित किया गया।

Codex Vaticanus (4. Jahrhundert)
markiert 14:34–35 als eine störende Unterbrechung



2 Punkte + Strich zeigen einen störenden Textblock

Die **Roten Dreiecke** zeigen die **Lücke** genau dort an, wo der ursprüngliche Text unterbrochen wurde.

चित्र का स्रोत: Bibliothèque nationale de France

कोडेक्स वैटिकनस में 15 स्थानों पर दो बिंदु और एक अधोरेखा एक **रिक्त स्थान** के साथ ठीक यह चिह्नित करते हैं कि मूल पाठ कहाँ बाधित किया गया।

दूसरी हस्तलिपियों में सब **15 स्थानों** पर कम से कम **चार** शब्दों के व्यवधान सुरक्षित हैं। ऐसे लंबे व्यवधान औसतन वैटिकनस के पाठ की 83.5 पंक्तियों में केवल एक बार आते हैं।

यदि इन चिह्नों का झूठे व्यवधानों से **कोई संबंध न होता** और वैटिकनस की 15 यादृच्छिक पंक्तियाँ 100 लाख करोड़ (100 ट्रिलियन) **वर्षों** तक लगातार हर सेकंड चुनी जातीं, तो इसकी संभावना कि सब 15 पंक्तियाँ **एक बार भी** चार या अधिक शब्दों के किसी व्यवधान से मेल खाएँ, दो हज़ार में एक से भी कम है।²⁶

इसके अतिरिक्त ये लंबे व्यवधान इन पंक्तियों पर कहीं भी नहीं, बल्कि मूल लेखकों के **सब 15** दो-बिंदु-और-रेखा चिह्नों पर ठीक **एक रिक्त स्थान पर** आते हैं।

इस लेखक ने यशायाह में तीन बार स्पष्ट किया है कि क्षैतिज रेखाएँ जोड़े गए पाठ को चिह्नित करती हैं, और तीनों मामलों में, ठीक नए नियम के 15 स्थानों की तरह, पाठ में एक **रिक्त स्थान** छोड़ा, ठीक वहाँ जहाँ जोड़ा गया पाठ मूल पाठ को बाधित करता है। **केवल** मूल लेखक ही पाठ में रिक्त स्थान छोड़ सकता था।

इस लेखक का यह आकलन कि “स्त्रियाँ चुप रहें” एक झूठा पाठ है, दो कारणों से टाला नहीं जा सकता।

पहला, यूनानी नए नियम के दोनों मानक संस्करण इस लेखक से इस बात में सहमत हैं कि **हर दूसरे** दो-बिंदु-और-रेखा चिह्न पर डाले गए पाठ-खंड अप्रामाणिक जोड़ हैं।

दूसरा, इन जोड़ों वाली हस्तलिपियों की विविधता दिखाती है कि इस लेखक के पास वैटिकनस से पहले के समय के नए नियम के पाठ आज हमारे पास उपलब्ध पाठों से **कहीं अधिक** मात्रा में उपलब्ध थे।

फिर भी यह सच है कि पद 34-35 सब उपलब्ध हस्तलिपियों में कहीं न कहीं (अर्थात पद 33 या 40 के बाद) आते हैं, जिसके लिए एक असाधारण रूप से प्रारंभिक जोड़ आवश्यक है। परन्तु केवल वैटिकनस ही उन्हें अप्रामाणिक के रूप में चिह्नित नहीं करता। बिशप विक्टर (Victor) ने कोडेक्स फुल्डेन्सिस (Codex Fuldensis) के निचले हाशिये पर एक सुधारा हुआ पाठ लिखवाया, जो इन पदों को छोड़ देता है, और अ-पश्चिमी पाठ MS 88 उन्हें पद 33 के बाद छोड़ देता है, परन्तु पद 40 के बाद ऐसे चिह्नों के साथ डालता है जो बताते हैं कि उन्हें पद 33 के बाद आना चाहिए। चूँकि ये पद 1 कुरिन्थियों के विक्टर के पाठ-साक्षियों में नहीं आते, इसलिए डैन वॉलेस (Dan Wallace) का यह दावा कि “ये पद 1 कुरिन्थियों के सब पाठ-साक्षियों में आते हैं” सच नहीं है (<https://bible.org/article/textual-problem-1-corinthians-1434-35>)। पाठ-विद्वान एक ही हस्तलिपि में अलग-अलग पाठों को अलग-अलग हस्तलिपि-चिह्न देते हैं। 14:34-35 उन सब पाठों में नहीं आता जिन्हें इन अलग-अलग हस्तलिपि-चिह्नों द्वारा पहचाना जाता है। **यह सच नहीं है कि 14:34-35 के पाठ का सब हस्तलिपियाँ “समर्थन” करती हैं।**

अपनी गलत आधार-धारणा के आधार पर वॉलेस आपत्ति करते हैं “कि वे प्रसार के सबसे प्रारंभिक चरण में ही पाठ में घुस आए होंगे ... मूल दस्तावेज़ में।” ऐसा कुछ संभव है, यह इफिसियों 5:22 में “अधीन रहना” क्रिया के **शीघ्र** अपनाए जाने से समझा जा सकता है²⁷, जो आसानी से यह समझा सकता है कि इन पदों 34-35 का जोड़ दूसरी शताब्दी के काफ़ी भीतर तक सब उपलब्ध हस्तलिपियों में कैसे आ गया।

पाठ के बहुत से प्रमुख विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ये पद पौलुस ने नहीं लिखे।²⁸ डेविड बेंटली हार्ट (David Bentley Hart) का नया यूनानी-ऑर्थोडॉक्स अनुवाद इन पदों को “लगभग निश्चित रूप से अप्रामाणिक” कहकर अस्वीकार करता है। जर्मन बाइबल सोसाइटी (Deutsche Bibelgesellschaft) की नई बाइबल में कहा गया है कि ये पद “उसके विरुद्ध हैं जो पौलुस अध्याय 11 में कहता है” और “संभवतः बाद का जोड़” हैं। (“BasisBibel (जर्मन बाइबल अनुवाद); उद्धरण: 14:34, पद 34-35 उसके विरुद्ध हैं जो पौलुस 1 कुरिन्थियों 11:2-16 में कलीसिया में स्त्रियों की भूमिका के बारे में कहता है। यहाँ संभवतः बाद का एक जोड़ है।”)

आइए, एक बार फिर सारांश में देखें कि इन चार आपत्तियों के बारे में बाइबल वास्तव में क्या सिखाती है:

1. पुरुषों और स्त्रियों को **मिलकर** अगुवाई करनी चाहिए।
2. स्त्रियाँ कलीसिया में शिक्षा **दे सकती हैं**।
3. पौलुस **सब** विश्वासियों को **अध्यक्ष** के पद की अभिलाषा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
4. बाइबल स्त्रियों को कलीसिया में **बोलने** और यहाँ तक कि भविष्यद्वाणी करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है।

इन चार कारणों की, जिनके बारे में मैं **सोचता था** कि वे अधिकार को पुरुषों तक सीमित करते हैं, सावधान जाँच दिखाती है कि बाइबल इसके बजाय यह सिखाती है कि स्त्रियाँ और पुरुष समान रूप से स्वतंत्र हैं कि वैसे अगुवाई करें जैसे परमेश्वर उन्हें वरदान देता और उनकी अगुवाई करता है।

अगुवाई में स्त्रियों को शामिल करने के विरुद्ध इन चार आपत्तियों की समस्या केवल यह नहीं है कि जिन पाठों का वे सहारा लेती हैं, उनमें से कोई भी वास्तव में इसे प्रमाणित नहीं करता। उनकी निर्णायक समस्या यह है कि बाइबल के इतने सारे **मूलभूत सिद्धांत** इसके **सीधे विरुद्ध** हैं, जिनमें पौलुस के ये धर्मवैज्ञानिक सिद्धांत भी शामिल हैं कि पुरुष और स्त्री **समान** हैं:

दोनों समान रूप से **परमेश्वर के स्वरूप** में सृजे गए हैं।

दोनों समान रूप से पृथ्वी पर **प्रभुता** के लिए ठहराए गए हैं।

दोनों को **सृष्टि की आशीष** मिली है।

दोनों को **सृष्टि का दायित्व** सौंपा गया है।

दोनों **मसीह में** समान अधिकार रखते हैं।

कलीसिया में परस्पर अधीनता पुरुष और स्त्री की समानता को मानकर चलती है, ठीक वैसे ही जैसे **विवाह में परस्पर** अधीनता,

मसीह की देह की **एकता**,

सब विश्वासियों का याजकपद,

मसीह में **स्वतंत्रता**,

नई सृष्टि, जो आरंभ हो चुकी है।

आत्मा **सब** विश्वासियों को सेवा के लिए वरदान देता है।

कलीसिया की अगुवाई का **सेवा** होने का स्वरूप पुरुषों और स्त्रियों पर **समान रूप से** लागू होता है।

पुरुषों और स्त्रियों को प्रार्थना और भविष्यद्वाणी में आराधना की अगुवाई कैसे करनी चाहिए, इस बारे में अपने निष्कर्ष को पौलुस 1 कुरिन्थियों 11:11 में उस शब्द से आरंभ करता है, जिसका प्रयोग वह बार-बार किसी चर्चा को रोककर उस बात पर ज़ोर देने के लिए करता है जो **महत्वपूर्ण** है।²⁹ "तौभी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष के बिना है, और न पुरुष स्त्री के बिना।" गलातियों 3:28 में इसी प्रकार कहा गया है: "न ... नर और नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"

पौलुस के शब्द और समानांतर स्थान यह निष्कर्ष निकालने देते हैं कि यह कलीसिया का वर्णन करता है। उसने अभी-अभी पतरस को इस बात के लिए डाँटा था कि वह अन्यजातियों के साथ भोजन की संगति से पीछे हट गया था, क्योंकि यह सुसमाचार के विरुद्ध था। सब स्त्रियों को कलीसिया की अगुवाई से बाहर रखना निश्चय ही सुसमाचार के और मसीह में हमारी एकता के और भी अधिक विरुद्ध है।

टिप्पणियाँ

1. LSJ9 801; D. Dhimitrakou, *Μεγά Λεξικόν Όλης της Ελληνικής Γλώσσας* (9 vols.; Athens: Oikos Dhimitrakou, 1933–1950) 5:3880 [using the OdysseyUBSU font from LaserGreek in Unicode linguistsoftware.com]].
2. Moulton और Milligan, Friedrich Preisigke, Pierre Chantraine, S. C. Woodhouse, E. A. Barber, R. Renihan और P. G. W. Glare के LSJ-पूरक, और वे तेरह अतिरिक्त शब्दकोश जिनका उल्लेख Richard S. Cervin, "Does Kephalē mean 'Source' or 'Authority Over' in Greek Literature? A Rebuttal," *Trinity Journal* 10 NS (1989) 85–112, में 86–87 पर करते हैं।

3. इब्रानी लेखों के सबसे अच्छी तरह प्रमाणित यूनानी संस्करण की ओर संकेत, जैसा वह Rahlfs और सेप्टुआजेंट (LXX के नाम से भी ज्ञात) के गोटींगन (Göttingen) संस्करणों में मिलता है। हमारी अंग्रेज़ी बाइबलें इनमें से अधिकतर का अनुवाद "head" (सिर) करती हैं, जैसे NASB 116 बार और ASV 115 बार, क्योंकि अंग्रेज़ी में "leader" (अगुवा) "head" (सिर) का एक प्रचलित अर्थ है।
4. eis kephalēn
5. उदाहरण के लिए, न्यायियों 11:11 में "सिर के रूप में" के बाद "उन पर शासक के रूप में" का जोड़ "सिर के रूप में" को एक ऐसा अर्थ देता है, जो अन्यथा यूनानी पाठकों के लिए स्पष्ट न होता।
6. "वह सिर (κεφαλή), जिससे ἕξ οὖν सारी देह ... बढ़ती है" कुलुस्सियों 2:19; इफिसियों 4:15-16 में। कुलुस्सियों 1:18 स्पष्ट करता है: "वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है [αὐτός ἐστιν ἡ κεφαλή], ὅς ἐστιν ἡ ἀρχή, जो "देह के जीवन का स्रोत [‘उद्गम’ (NEB)] है" (TEV/GNT)। 1:16-17: "क्योंकि उसी में सब वस्तुएँ सृजी गईं ... सब कुछ उसी के द्वारा सृजा गया है ... और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं" ... "कूसे के लहू के द्वारा" (1:20) मसीह ने "अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा मेल कर लिया" (1:22)। 1 कुरिन्थियों 11:3abc, 4b, 5b। इफिसियों 1:20-22 में स्थान-संबंधी उल्लेखों पर ध्यान दें: "स्वर्गीय स्थानों में, बहुत ऊपर ... नीचे ... उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया [τῇ ἐκκλησίᾳ]।" कुलुस्सियों 2:9-10: "क्योंकि उसमें [मसीह में] ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदैव वास करती है, और तुम उसी में जीवन की परिपूर्णता तक पहुँचे हो, जो सारे शासन-अधिकार का मुकुट है।"
7. नए नियम का हर संबंधित शब्द अगुवाई की ओर संकेत करता है; तुलना करें Philip B. Payne, "What About Headship? From Hierarchy to Equality", in *Mutual by Design: A Better Model of Christian Marriage* (सं. E. Beyer; Minneapolis, MN: CBE 2017) 150-152।
8. Cf. especially Eldon J. Epp, *Junia: The First Woman Apostle* (Minneapolis: Fortress, 2005) 110–21 and Richard Bauckham, *Gospel Women: Studies of the Named Women in the Gospels* (Grand Rapids: Eerdmans, 2002) 165–186.
9. इससे स्पष्ट होता है कि पौलुस ने इफिसुस की स्त्रियों को स्पष्ट रूप से किसी पुरुष को शिक्षा देने के लिए अधिकार हड़पने से क्यों मना किया, और इस खंड में एक आज्ञार्थक वाक्य क्यों है: "स्त्रियों को सीखने दो" (1 तीमुथियुस 2:11)।
10. लगभग ईसवी 370, संत बेसिल (Basilius), पत्र 69, पंक्ति 45: "वह [रोम का बिशप] स्वयं इस विषय में पूर्ण अधिकार [αὐθεντία] का प्रयोग कर सकता है, ऐसे पुरुषों को चुनकर जो यात्रा का परिश्रम सहने में समर्थ हों।" Roy J. Deferrari, *St. Basil* 2:40-43 (LCL)।
11. Philip B. Payne, "1. Tim 2.12 and the Use of οὐδέ to Combine Two Elements to Express a Single Idea", NTS 54 (2008): 235-53 पौलुस द्वारा οὐδέ के हर प्रयोग की जाँच करता है। Philip B. Payne, "Οὐδέ [oude] Combining Two Elements to Convey a Single Idea and 1 Timothy 2:12," in *Missing Voices: Broadening the Discussion on Men, Women, and Ministry*, ed. Hilary Ritchie (Minneapolis: CBE International, 2014), 24-34, आपत्तियों का उत्तर देता है और यूनानी साहित्य में οὐδέ के इस प्रयोग को उदाहरणों से स्पष्ट करता है।
12. Exodus 15:21; Judges 5:2–31; 1 Samuel 2:1–10; 25:24–31; Proverbs 31 (31:1 "an inspired utterance his [King Lemuel's] mother taught him" NIV) and Luke 1:25, 42–45, 46–55, नीतिवचन 31
13. C. E. B. Cranfield, *The Epistle to the Romans* (ICC; Edinburgh: T&T Clark, 1979) 2:781.
14. यह सब विश्वासियों को अध्यक्ष के पद की अभिलाषा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
15. Douglas J. Moo, "The Interpretation of 1 Timothy 2:11–15: A Rejoinder," *Trinity Journal* 2 NS (1981) 198–222, at 211; Thomas R. Schreiner, "Philip Payne on Familiar Ground: A Review of Philip B. Payne, *Man and Woman, One in Christ: An Exegetical and Theological Study of Paul's Letters*" *JBMW* (Spring 2010) 33–46, at 35.
16. समाधि-लेखों से स्पष्ट है कि यह मुहावरा विश्वासयोग्यता व्यक्त करता है।
17. इसलिए यह हर दावा कि इसका कोई एक शब्द अलग शर्त का भी काम करता है, मुहावरे का दुरुपयोग करता है और दोहरे अर्थ की माँग करता है। किसी मुहावरेदार वाक्यांश के एक शब्द को अलग करके उस शब्द को एक अलग शर्त के रूप में समझना गलत है।
18. क्रिसोस्टम ने लिखा: "कुछ लोगों ने सोचा है कि पद 11 सामान्य रूप से स्त्रियों के बारे में कहा गया है, परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि वह स्त्रियों के बारे में कोई ऐसी बात क्यों लाए जो उसके विषय को बाधित करे? वह उनके बारे में बोल रहा है जिनका पद सेविकाओं (डीकनेस) का है।" *NPNF1* 13:763; *NPNF1* 13:116।
19. The Analytical Greek New Testament के सह-लेखक टिम फ़्रिबर्ग (Tim Friberg) ने पूरे यूनानी नए नियम की दो गणनाओं के आधार पर ये संख्याएँ निकालीं।
20. G. H. Hugenberger, "Frauen im kirchlichen Amt: Hermeneutik oder Exegese? A Survey of Approaches to 1 Timothy 2:8-15" *JETS* 35/3 (1992) 341-60, 360 पर टिप्पणी 78: "पुरुष-केंद्रित शब्दावली का प्रयोग करने वाले मानदंडों की व्याख्या सामान्यतः इस प्रकार की जानी चाहिए कि उनमें दोनों लिंग शामिल हों।"
21. Codex Vaticanus B, जिसे व्यापक रूप से नए नियम की सबसे विश्वसनीय यूनानी हस्तलिपि माना जाता है।
22. W. Klein, "The Church and the Prophets," *ATR* 44 (1962) 8.
23. Ulrich Schmid, "Conceptualizing 'Scribal' Performances: Reader's Notes," in *The Textual History of the Greek New Testament: Changing Views in Contemporary Research*, ed. Klaus Wachtel and Michael Holmes (Atlanta:

SBL, 2011), 49-64, at 62, 50, 58: Readers ... react[ed] to what they read by adding comments in the margin. . . . इनमें से कुछ टिप्पणियाँ उन लेखकों द्वारा पाठ में उतारी गई होंगी, जिन्हें ऐसी “सजाई हुई” [हस्तलिपि] की प्रतिलिपि बनानी पड़ी। . . . लेखकों का झुकाव, कम से कम प्राचीन लोगों की दृष्टि से, हाशिये की टिप्पणियों को मुख्य पाठ में ले लेने का प्रतीत होता है।”

24. उदाहरण के लिए प्लुटार्क (Plutarch), अरिस्टोफ़ेनीज़ (Aristophanes), अरस्तू (Aristoteles), सोफ़ोक्लीज़ (Sophokles), डेमोक्रीटस (Demokrit), एलियस एरिस्टाइडीज़ (Aelius Aristides) और बहुत से रब्बी।
25. इसे “प्रतिलिपि-संभाव्यता” (transcriptional probability) कहा जाता है। यह एक अनूठा मामला है। जिस मुख्य कारण से हम इसे हाशिये का पाठ मानते हैं, वह किसी दूसरे पाठ की विश्वसनीयता को कमज़ोर नहीं करता।
26. यदि रेखाओं और बिंदुओं का जोड़ों से कोई संबंध नहीं है, तो सब 15 पंक्तियों में कहीं भी ऐसा होने की संभावना 83.5^{15} में एक है। यह 6.6880134×10^{28} में एक से भी कम है ($10^{28} = 100$ लाख करोड़ गुणा 100 लाख करोड़)। एक वर्ष में 31,536,000 सेकंड होते हैं।
27. जैसा लगभग सब यूनानी संस्करण दिखाते हैं, इफिसियों 5:22 की सबसे पुरानी हस्तलिपियों में “अधीन रहना” क्रिया नहीं है। जेरोम (Hieronymus) की टीका में कहा गया है कि यूनानी हस्तलिपियों में पद 22 में पद 21 की “अधीन रहना” क्रिया कभी दोहराई नहीं जाती। UBS-पाठ में कहा गया है कि यह “लगभग निश्चित” है कि “अधीन रहना” बाद में जोड़ा गया। पहली हस्तलिपि, जिसमें पद 22 में कहीं “अधीन रहना” का कोई रूप आता है, कोडेक्स साइनाइटिकस (Codex Sinaiticus), लगभग ईसवी 360 में लिखी गई। परन्तु उसके बाद हर उपलब्ध हस्तलिपि में “अधीन रहना” है। चूँकि किसी बाद की हस्तलिपि ने “अधीन रहना” को हटाया नहीं, इसलिए यह विश्वसनीय नहीं है कि “अधीन रहना” सब सबसे पुरानी हस्तलिपियों से हटा दिया गया। क्योंकि पौलुस ने लिखा: “मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो, हे पत्नियों, अपने-अपने पतियों के ...”। अतः पत्नी की अधीनता अपनी क्रिया के लिए “एक दूसरे के अधीन रहो” पर निर्भर है। परस्पर-सूचक सर्वनाम परस्पर अधीनता की माँग करता है। इसलिए इसका संबंध किसी वरिष्ठ के अधीन होने से नहीं हो सकता। यहाँ अधीन रहने का अर्थ बल्कि “प्रेम में स्वेच्छा से झुकने के अर्थ में अधीनता” है, BDAG 1042। कुलुस्सियों 3:18 में कहा गया है कि पत्नी अधीन रहे “जैसा प्रभु में उचित है”। बाइबल पत्नी की अधीनता का जो कारण बताती है, वह कोई ईश्वर द्वारा स्थापित लिंग-पदानुक्रम नहीं है, बल्कि “ताकि परमेश्वर के वचन की निंदा न हो” [तीतुस 2:5], अर्थात् ऐसा व्यवहार करना जो सांस्कृतिक मानदंडों का उल्लंघन न करे। तुलना करें: “ताकि यदि उनमें से कुछ पति वचन को न मानते हों, तौभी वे बिना वचन के अपनी पत्नियों के चाल-चलन द्वारा जीत लिए जाएँ ... वैसे ही पति भी [अपनी-अपनी पत्नियों के] अधीन रहें, एक दूसरे के साथ बुद्धिमानी से रहें, उन्हें एक निर्बल स्त्री-संबंधी [BDAG 208, gynaikeios, “स्त्री-संबंधी”। “] बहुमूल्य पात्र जानें, और उन्हें वह सम्मान दें जिसके वे जीवन के अनुग्रह-दान की संगी वारिस होने के नाते योग्य हैं, ताकि तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ” [1 पतरस 3:1, 7]।
28. Philip B. Payne, *Man and Woman, One in Christ* (Grand Rapids, MI: Zondervan, 2009) 226-227 पचपन अध्ययनों का उल्लेख करता है जो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इनमें सबसे प्रतिष्ठित सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) पाठ-शोधकर्ता गॉर्डन फ़ी (Gordon Fee) और हाल में रिचर्ड फ़ेलोस (Richard Fellows) शामिल हैं। प्रमुख रोमन कैथोलिक विद्वान जोसेफ़ फ़िटज़मायर (Joseph Fitzmyer) ने कहा कि “आज के अधिकांश व्याख्याकार” इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह बाद का जोड़ है। पाठ-शोधकर्ता किम हेन्स-आइटज़ेन (Kim Haines-Eitzen) कहती हैं कि यह बात “आज लगभग सब विद्वानों” द्वारा कही जाती है।
29. BDAG 826, “किसी चर्चा को रोककर मुख्य बात पर ज़ोर देना”; A. T. Robertson, *A Grammar of the Greek New Testament in the Light of Historical Research* (Nashville, TN: Broadman Press, 1934), 1187, Blass का हवाला देते हुए, “to single out the main point.” BDF\$449 (पृ. 234) “पौलुस के यहाँ, किसी चर्चा को समाप्त करने और मुख्य बात पर ज़ोर देने के लिए।”